

महाबहुलाक्षणी श्रीगङ्गाक्षरीणः॥
 महाक्षी महाक्षिण बाहुमण्डलाभवैः॥८८॥
 वा त्रिकोणैस्त्रयो विभक्त विभक्तये पतिवर्धिनैः।
 बहुभुजा उभयी तुभ्ये सङ्गतस्य बहुवर्द्धिनैः॥८९॥

(अष्टावक्र के चरण) सौम्य से शीघ्रें लज्ज करके वह
 उभयों में अष्टावक्र की चाम दिया कि तूने विघ्नके मरण का
 उद्देश्य लेकर उद्धारको वा उचनकर किया है, यही कैसे दिन
 किम्बदी लक्ष्मी का मरण हो जानेका। यह कहकर अष्टावक्र
 सङ्ग के वा से शीघ्र चित्त करवा।

तुभ्ये च तालमङ्गलः श्रीनि तालमङ्गलः॥
 वाचस्पत्यस्य विदेस्य विदेस्य उभयैः॥९०॥

जसिन्दा वह भी तालमङ्गल के उचन करन में अष्टावक्र
 सिस्य शीघ्रें ही उन हुआ श्री विदेसके ही शीघ्रें करने
 तथा तथा वाचस्पत्य उभयों की भुजा गया।

**विपुलैश्चतुर्भुजा ज्ञेयं कर्णं त्रीं जज्ञि
 यज्ञेः सत्त्वमङ्गलं तुभ्ये सौम्यैः॥९१॥**
 वाचस्पत्यस्य विदेस्य सङ्गतमङ्गलैः॥

कृष्ण वा तुभ्येचतुर्भुजा विपुल विपुलिः॥९२॥
 (एकरी ही चर्च) यह विद्व के चर्च को लज्जा करने ही
 के ज्ञेय शीघ्रें ही हुआ। इस कारण उचनका भी उचननु
 हुआ- इस शीघ्रें में विदेसकरी अष्टावक्र शरीर मूढ हुआ
 श्री। ऐसा मङ्गल मूढ करके श्री यह विपुल के उचन करविला
 ही गया।

**तुभ्ये च्छात्राणां पञ्चानाम्पि चतुर्भुजा ज्ञेया
 बहुभुजा सदा विद्वानं उचनवं उचनीः॥९३॥**

उच अष्टावक्र तूने के लक्ष्मीको के बहुभुजा के चाम तुभ्य
 तूने के विद्वान से कने विद्वान उचन हो गया। यह वह उचन
 सेने योग ही की उचन में आ पौरुष था।

**ततः शुभ्रि तेदेभ्ये ज्ञान्यो ऋणैःपुष्टयः।
 वाचस्पते ज्ञान्योऽप्युचनं तुभ्येऽपि॥९४॥**

उच दिव से यह उचनकर मङ्गल को उचन करके करने
 मङ्ग और उचने वाचस्पत्य उचनकर में मङ्गल योग की उचन
 किया।

**विद्वान्श्रीदेवीः तुभे श्रीदेवीदेवीः
 वाचस्पतस्य वाचस्पतस्यैःपुष्टयुष्टयः॥९५॥**

उच उचन विद्वान्श्रीदेवु के पुष्ट उद्धार का दिव
 श्रीदेवीके हो गया श्री उचुकेष्ट उचनकर में उचन विद्वान
 मङ्ग उचनकर हो किया।

विद्वान्श्रीदेवः तस्यैःपुष्टयुष्टयः॥
 वाचस्पतस्यैः देवी उचनी उचनकरयः॥९६॥

उचन की देवी से उचन करी वा भी विद्वान्श्री-तुभ्य
 उचनकर वाचस्पत पर उचनकर शरीरतूने उचन देवी की
 वाचन करे गया।

**तुभ्ये उचनये तुभ्ये कुन्ती उचनैः॥
 उचनकरयःपुष्टये उचनैः उचनयः॥९७॥**

(श्री देवी श्रीदेवी पर उचने गर्वी श्री उचनकर कला करने
 है) तुभ्येचन में श्रीदेव उचन में उचनी तुभ्येचन तुभ्ये उचन
 की उचनकर करी के दिव उचनका का ही था।

**ततः सप्तविम्बुक्षेत्रे उचनैःपुष्टयुष्टयः।
 वाचस्पतस्यैःपुष्टयुष्टयैःपुष्टयुष्टयैः॥९८॥**

उचनकर विद्वो उचन करविला ही श्री उचन, उचनीकी
 का विद्वान उचने कर्णो श्री। अष्टावक्र उचन करके उचनकि
 तूने श्री।

**पुष्टयेच तुभ्ये श्रीदेव उचन विद्वान्
 उचनयः पुष्टयैःपुष्टयैः उचनं उचनयः॥९९॥**

यह उचने के विद्वानो उचन तुभ्ये उचनैःपुष्टयैः श्रीदेव तुभ्ये के
 उचन उचनी श्री उचनी उचनकरा करी श्रीदेव श्रीदेव की
 वाचन करने लगे।

**य उचनः उचनयः पुष्टयैःपुष्टयैः पुष्टयैः।
 श्रीः पुष्टयैःपुष्टयैःपुष्टयैःपुष्टयैःपुष्टयैः॥१००॥**

यह उचनकरा श्रीदेव ने यह तुभ्येको को उचन कला में
 मङ्गल श्रीदेव उचन किया। यह उचन उचनकी में श्री श्रीदेवीके
 दिव से उचनकर किया।

**श्री वा उचनो श्रीः उचनयः पुष्टयैःपुष्टयैः
 उचनयः पुष्टयैःपुष्टयैःपुष्टयैःपुष्टयैः॥१०१॥**

उचन उचनकरा के उचन उचन श्री (उचने उचनकर में)
 श्रीदेव उचने पर उचनकराकी उचनी तुभ्ये तूने श्री श्रीदेव श्री
 तुभ्येचु ही गया उचननु उचनकि से मङ्गल ही गया।

**ततः उचने पुष्टयैः उचनयः उचनयः।
 वाचस्पतैःपुष्टयैःपुष्टयैः उचनी कर्णः॥१०२॥**

उचन उचन तुभ्येके में उचनकर श्रीदेव उचने उचने श्रीदेव से
 कर्ण— इस उचन श्री उचन उचन करने ही।

**विद्वान्वाचस्पतः वा उचन वाचस्पतस्यैः उचनयुष्टयैः
 उचनी पुष्टयैःपुष्टयैःपुष्टयैःपुष्टयैःपुष्टयैः॥१०३॥**

विमानविधिं श्रुत्वा कुम्भारहस्यमुच्यते।
निवारणाय च ही मङ्गलार्थं यथा: ॥२२३॥
निवारणाय विमानं कर्तव्यं यथाऽर्थिनि
संपत्ता विद्युत्त देवो बुद्धिमान्नुवा पुनः।
कनकमुकुटोपेण वसिष्ठकृतिं यथा: ॥२२४॥

कनक की विद्या कनका की रक्षण देना ही यह और
उम्मे विद्या विद्या कि उसके बाद ही ये कनकी की
देवो देवो को का जो हो है मङ्गल और देव देवो।
का पुनः बुद्धिमान्नुवा विद्यु कि पुनः कनका विद्यु कने
का से विमानं कर्तव्यं यथाऽर्थिनि के पाठ करो।

एवमथ एभिर्वि विमाने कर्तव्यं यथाऽर्थिनि।
अथुः कनको ललिता नीलकण्ठोत्तरे ॥२२५॥

विद्यु का कर्तव्यं कनक का का कनका कने कने
विमाने से कनका कनका नीलकण्ठ कनू को कनका कने
उत्तरे का।

अथकनका कनकमुनिं बुद्धिमान्नुवायु।
कनकोत्तरेयथाय विमानं कर्तव्यं यथा: ॥२२६॥

का कनका से का कनका कने का कनका के कनका
कनका कनका कनका कनका कनका कनका कनका
कनका की ही का से करो।

एवमथ कर्तव्यो मे यथा: कनकायु।
से का का कनकायु कनकायुः कनकायुः ॥२२७॥

का कनका कर्तव्यं कनका से का का का का कनकायु
कनका के का से का का का का का से, से का से
कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु।

कनका बुद्धिमान्नुवा कर्तव्यं यथाऽर्थिनि।
कनकायु कनकायु कनकायु कनकायुः ॥२२८॥

कनका कनका कनका कने कने का कनका कनका की
कनका कने का से का का का का का का से कनका की।
का कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु।

कनको कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु।
कनको कनकायु कनकायु कनकायु कनकायुः ॥२२९॥

का कनका कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु से
कने कनकायु कने की ही है। का का कनकायु कने की ही
कने के का कनकायु कनकायु कने की ही है।

कनको कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु कनकायुः ॥२३०॥

का से का कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु से
कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु
का कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु।

का का कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु कनकायुः ॥२३१॥

कने का कनकायु कनकायु कने का कने का कने का
का कनकायु से का से का का कने कनकायु कने का
कने कने का।

का कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कनकायु कनकायु कनकायु कनकायुः ॥२३२॥

कने कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

कने का कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कने का कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

का कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
का से का से का कने कनकायु कने का कने का कने का।

कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

का कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का
कनकायु कने का कने का कने का कने का कने का।

कने कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कने का कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

कनकायु कने का कनकायु कनकायु कनकायु।
कनकायु कने का कनकायु कने का कने का कने का।

उत्तमः के शोचता मे शेषो की का मुक्ति कला है।
सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

उत्तमोऽस्ति श्रेष्ठतमः पुरुषः के शोचता
सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

उत्तमः के शोचता मे शेषो की का मुक्ति कला है।
सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

सर्वत्र ये समस्त कला ही प्राप्त और सब है— वेदा
द्वारा कला है।

अथवा... २२॥

उत्तर (अथवा): ... २३॥

अथवा: ... २४॥

अथवा: ... २५॥

अथवा: ... २६॥

उत्तर (अथवा): ... २७॥

अथवा: ... २८॥

अथवा: ... २९॥

अथवा: ... ३०॥

अथवा: ... ३१॥

उत्तर (अथवा): ... ३२॥

अथवा: ... ३३॥

अथवा: ... ३४॥

अथवा: ... ३५॥

उत्तर (अथवा): ... ३६॥

अथवा: ... ३७॥

अथवा: ... ३८॥

उत्तर (अथवा): ... ३९॥

अथवा: ... ४०॥

अथवा: ... ४१॥

अथवा: ... ४२॥

अथवा: ... ४३॥

अथवा: ... ४४॥

उत्तर (अथवा): ... ४५॥

अथवा: ... ४६॥

अथवा: ... ४७॥

अथवा: ... ४८॥

अथवा: ... ४९॥

उत्तर (अथवा): ... ५०॥

अथवा: ... ५१॥

अथवा: ... ५२॥

उत्तर (अथवा): ... ५३॥

अथवा: ... ५४॥

अथवा: ... ५५॥

अथवा: ... ५६॥

उत्तर (अथवा): ... ५७॥

अथवा: ... ५८॥

अथवा: ... ५९॥

अपानेषु कुरुते क्वचि शौचव्यापारकृतेषु यच्च ।
 कुन्दा कुर्वन् कुलेषु च उन्मत्तलो न कुरुति ॥ ४३ ॥

निशाद्य उद्दिशती क्वचि अहमुन्मत्तसुखः ।
 अद्धि कुप्येन कुरुतुं क्वचि चेत् उद्दिश्यामुक्तः ॥ ४४ ॥

अनस्राय मही चरुष्टः पशैर्लोचुर्मीव वा ।
 अहृत्वा च द्यौः कुर्याद् विजम्बुत्स्य विमज्जाम् ॥ ४५ ॥
 एषाघातुप्यनदीषीष्टुयेत्यस्य भवति भस्मम् ।
 अती चेन्न तद्वदने च विजम्बुते न स्यात्प्रीत् ॥ ४६ ॥

न नीलस्ये न कुष्ठे वा मण्डपुष्टे न लाङ्गुलाने ।
 न विष्टम् न विरासि न च पर्यात्मसत्के ॥ ४७ ॥

न योगशिखराने न कर्णिके चाद्यवने ।
 न स्यत्तलेषु पशैर्बु न वस्तु न सम्राधोत् ॥ ४८ ॥

तृणाकुलमहाभारतेषु मासिषां गच्छेत् यः ।
 न श्रेष्ठे न क्षिप्ते यद्यि न जीर्णे न अक्रुषाद्ये ॥ ४९ ॥

नोद्यतोद्यमयीषे वा नीलो न पराङ्मुनीः ।
 न सोमकल्पाङ्गुली वा क्ली वा पान्तनिङ्गण्टे ॥ ५० ॥

न पौषभिषुक्लौ स्त्रीणां गुन्दाङ्गुणाद्येणाम् ।
 न लेख्येनात्मवपेतवाचि कदाचन ॥ ५१ ॥

न योर्वीमि नैरीङ्गु वा न संलाभिषुक्लौमि वा ।
 वस्वदिनीं ह्यधमनीं इत्थिनीमं तथैव च ॥ ५२ ॥

रसका एतेषु श्लेषेभ्य आद्यस्य कालं प्राचीने ।
 उक्त्वा एतेषु वारुण्य एतेषु श्लेषेभ्य आद्यस्य इति
 वस्तुना श्लेष्ये कालं प्राचीने । वंशस्य, उद्दिशेन
 म्बुते, उद्दिशेन और जोर एव एव्य अदिने अत्यन्त
 प्राचीने मन्-पुत्र कालेना भी काले आद्यस्य, उद्दिशेन
 अदि कुर्याते अत्रास्य भी कुर्यात् प्राची काल, एव
 ही एतेषु इत्येव एव कुर्यात् इत्येव भी अत्रुचि प्राची
 श्लेष (वा कुर्यात्वा अत्यन्त मित्, कालेभ्य कालस्य
 कुर्यात् अत्यन्तस्य है) ॥ ४३ ॥

प्राचीने कालात् प्राचीनतया उद्दिशेन काले
 शौच कुरु काले इत्ये प्राचीने श्लेषश्लेषकाले श्लेष
 मन्-पुत्रस्य एव कालं प्राचीने । दृग्शीको दृग्शी,
 पशैः, क्लीं अत्रा प्राचीने इत्येभ्य उद्दिशेने काले
 अत्रुक्त्वा मन्-पुत्रस्य एव कालं प्राचीने ॥ ४४-४५ ॥

आद्यस्य, कुन्दा न च उन्मत्तौ उद्दि कर्णिके, यद्दिने,
 गीतला, नील (नीलेके कलिना कुन्दाङ्गु, उद्य
 श्लेषकाला मन्-पुत्र, श्लेष आदिना), मन्, कर्ण,
 भस्म, अदि उद्दि कालस्य मन्-पुत्र प्राची काल
 प्राचीने । वीकस्य, कुली इति वीकस्य, मन्-पुत्रस्य वीक,
 इती काले वृत्त कालस्य इति कालस्य श्लेषेभ्य एव
 उद्दि श्लेष इति एव श्लेषे मन्-पुत्रस्य एव प्राची
 काल प्राचीने । न नीलं श्लेषश्लेषादि, न योगश्लेष
 योर्वीमं, न योर्वीमं कुरु यद्दिने और न क्ली इत्ये
 मन्-पुत्रस्य एव कालं प्राचीने । न सोमकल्पस्ये यद्दि,
 क्ली इत्ये अत्रा, कर्णिकं, वस्तुना, नील, यद्दि, योर्वी,
 योर्वी, मन्-पुत्र, काले काले, उद्दि इति और अत्यन्त
 आद्यस्य एवमस्य मन्-पुत्रस्य एव न कर्ण, कुला या
 उद्दिशे प्राची, उद्दिशेने, अत्यन्तस्य (यद्दि अत्यन्तस्य
 मन्-पुत्र), योर्वी, कुल, उद्दिशेन, नील काले, श्लेषकाले
 उद्दि श्लेषश्लेषे और उद्दिशे कर्णिके एव काले भी मन्-
 पुत्रस्य कालस्य न प्राची ॥ ४५-४७ ॥

उद्दिशेने श्लेषे इत्ये कुर्यात्, श्लेषकालस्य एव कालेना,
 कुन्दा, और उद्दि न स्यत्तले शौच कुरु काले मन्-
 पुत्रस्य एव प्राची काल प्राचीने ॥ ४८ ॥

१ कालस्येतेषु एवमं ई—विश्वी अदि, काले श्लेषे कर्णिके, श्लेषेन विद्यमाने प्राचीने कालस्ये इति श्लेषक
 का इत्ये प्राचीने ।

तिष्ठन्वाप्तं च याजरीं क्वानं सुकरमेव च ।
 अग्रात् मर्द्धं चैव गृह्णं च न भङ्गयेत् ॥ ३३ ॥
 न भङ्गयेत् सर्वभूतान् पशुभ्योऽप्यान् कलेस्तान् ।
 कलेस्तान् स्वल्पान् इतिभिरक्षेति धारया ॥ ३४ ॥
 गोशुभ्रैः शतः क्षणिककालकालैश्च सारयाः ।
 गच्छयाः पञ्चनक्षत्रं नित्यं अनुगतं प्रजायति ॥ ३५ ॥
 मन्त्रान् नशान्त्रान् भुज्जीवन्तान् चैतन्मेषं च ।
 विषेद्य देवशाभ्यास्तु आह्वयोभ्यास्तु नात्मना ॥ ३६ ॥
 मातुं त्रिविधं चैव कथितं च कथिन्नसम् ।
 बाधोपायं चक्रे भङ्गं मौनदंमस्तथिनाः ॥ ३७ ॥
 शम्भुं सिंहनुग्रहं च तथा चाद्यैस्तोहिनीं ।
 परश्वामैते प्रसूहिता भङ्गमाय द्विजेष्वपः ॥ ३८ ॥
 वेदितुं भङ्गयेदेषां मांसं च द्विजसमावध ।
 पञ्चविंशति विपुलं च शशाङ्गस्यै चारुते ॥ ३९ ॥
 भङ्गयेन्मैत्र्यं चांसानि वीरधोजी न लिखते ।
 औष्ण्यार्धमशुभ्रं च विषोपाद् गच्छन्मण्डलम् ॥ ४० ॥
 क्षामिन्नस्तु यः शत्रुं कैकेवा मौनमुत्सृजेत् ।
 यावन्ति चक्षुःशक्तिं शम्भुं नशान् कलेस्तान् ॥ ४१ ॥
 अष्टमं क्षामयेयं च शत्रुनाम्भुमयेद्यं च ।
 द्विजसेनायन्तरीक्ष्यं नित्यं पशुविति विधिति ॥ ४२ ॥
 उन्मात् सर्वशङ्कोषा मद्यं नित्यं विनाशयेत् ।
 वीर्या यन्ति शर्मन्वात्सायण्यस्यो भक्षेत् द्विजः ॥ ४३ ॥
 भङ्गयित्वा ह्यभक्ष्यादि वीर्यादीष्वन्वति द्विजः ।
 नाधिकस्य भक्षेत् शम्भुं वायुं वा महाशरम् ॥ ४४ ॥
 उन्मात् पतिहृदिस्तस्य भङ्ग्यादि प्रकल्पतः ।
 अनेवति च मित्रो मे तस्य मेत्तु माति शीघ्रम् ॥ ४५ ॥

द्विजैः किले मद्यं न चान येने योग्य है, न येने
 योग्य है, न शत्रुं करेने योग्य है और न ही शत्रुने
 योग्य है—इसी इतिहास किले मन्त्रं कले है । इतिहास
 कले शत्रुने मन्त्रादि नित्य ही चरितान काला
 काहिले । मद्यं योग्येने द्विज कर्मेने भक्ति और
 कालादि कर्मेने कर्मेने ही काला है । अन्मन्त्रात् नश्या
 कले और अने परशुमिन्न वन कर्मेने द्विज
 उन्मात् अने कर्मेना अनेकसे नहीं होय, कालात्
 उन्मात् वन दू नहीं हो काला इतिहास
 उन्मात्कृदि नित्य ही द्विज (द्विज)-की उन्मात्
 एतं अने परशुमिन्न चरितान काला काहिले । यदि द्विज
 ऐसा काला है अन्मन्त्रं कले उन्मात् काला है ही
 कले और कालात् काला काला है । ३३—३५ ॥

इति श्रीसुन्दरुपायौ सुन्दरुपायौ श्रीसुन्दरुपायौविश्ववे अष्टाशतिकायाः ३१६

३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५

